अधूरी बातें

शुभा

समय के अन्दर और बाहर

1.

समय पानी जैसी एक चीज है जो ध्वनियों के साथ बहता है। मैं उस समय के बारे में बात कर रही हूँ जिसे घड़ी की सुईयों से नापा जाता है और उस समय की भी जो उम्र के अन्दर गिना जाता है मसलन एक आदमी कब पैदा हुआ, वह कितने साल का है या कब उसकी मौत हुई। तो ये गिनकर दर्ज होने वाला समय है कि जिसमें सुबह, दुपहर, शाम और रात होती है या साल, महीने और हफ्ते होते हैं। यह नाप में आने वाला समय बह जाता है। इसे उसी तरह रोका भी जा सकता है जैसे पानी को रोका जाता है; नहर बनाकर, क्यारियां और तालाब बनाकर। जब पानी या समय के बहाव को आप एक सांचे के अन्दर लाते हैं तो इसका मतलब है कि आप उसे नियन्त्रित करते हैं। उसे एक स्वरूप और चरित्र देते हैं। जब संगीतकार गाता है तो उस समय को वह चिह्नित कर देता है। हम जितना समय अधिक से अधिक सांचों में लाते हैं या समय जितने सांचे बनाता है उतना समय रंग, रूप और चरित्र धारण कर लेता है। यह समय जेल में रखे गए कैदी की तरह बन्द और विवश हो सकता है और हो सकता है यह स्वतन्त्र संरचना हो जो अपनी यात्राओं से गुजरती है मसलन एक संगीत रचना सदियों में यात्रा करती है और इस तरह समय सिर्फ गिनने लायक समय या मापने लायक समय नहीं होता। एक ओर उसके छोर हमेशा खुले रहते हैं। समय उतना ही विस्तृत है जितना अन्तरिक्ष। जैसे अन्तरिक्ष को नहीं नापा जा सकता वैसे ही समय को नहीं नापा जा सकता। आप जब इसे नापते हैं यह किसी नई यात्रा में अपना विस्तार कर रहा होता है इसलिए यह असीम है या बेहद है या सतत परिवर्तनशील है।

पृथ्वी की उम्र को लोग इसीलिए नाप पाते हैं क्योंकि कुदरत हमेशा अपना काम करती रहती है। इसलिए समय का सांचे में ढलना भी जरूरी है और उसकी शिनाख्त करने वाले का होना भी।

कितने ही लोगों में आपने एक गहरा शोक देखा होगा कि जीवन बेकार चला गया। यह इसलिए कि उनके समय की शिनाख्त करने वाला अनुपस्थित होता है। जैसे मज़दूर और गृहणियां जिनके श्रम और समय की पहचान नहीं हो पाती जबकि बड़े–बड़े सितारे और ब्रांड दुनिया में धूम मचाते रहते हैं। हमें श्रम की चोरी को समय की चोरी के रूप में भी पहचानना चाहिये और उस समय की पुनर्रचना करनी चाहिये, उसे दृश्यमान बनाना चाहिये। इस दृश्यमान समय की यात्राएं वह सभ्यता रचेंगी जिसमें कोई समय बिना पहचाना न रहे।

2.

श्रम को समय के अन्दर लाना केवल उत्पादन या मुनाफे का आंकड़ा नहीं है, वह सिर्फ गिनती नहीं है। वह उस समय के अन्दर मानव सम्बन्धों की भी पहचान है। वह उस समय के सौंदर्य और ऊर्जा की भी पहचान है। वह दुख–दर्द और खुशियों की भी पहचान है। अक्सर ट्रेड–यूनियनें समय की पहचान गिनकर और मापकर करती हैं इस तरह उस समय का बहाव यानि एक यात्रा अक्सर बाहर ही छूट जाते हैं। कभी कविता या गीत, नाटक या सांस्कृतिक शिल्प में ही यह प्रवाह आता है और श्रमिक या गृहणी का समय अपने रंग, ध्वनि और सम्बन्धों की बुनावट के साथ मूर्तिमान हो जाता है। अगर श्रमिकों के खैरख़्वाह सिर्फ गिनती और माप में ही श्रम को देखते हैं तो श्रम और उसे करने वाला श्रमिक दोनों ही अमूर्त हो जाते हैं। खुद श्रमिक और उसका समाज अपने श्रम, क्षमता और प्रतिभा से अजनबी होते जाते हैं। सबसे ज्यादा अलगाव होता है ट्रेड यूनियन लीडर का जो हिसाब–किताब देखता है पर श्रमिक का सौंदर्य नहीं देख पाता। अक्सर मज़दूरों और उत्पीड़ित तबकों के खैरख़्वाह उनके द्वारा रचे या उनके पक्ष में मौजूद भारी सांस्कृतिक खजाने देख नहीं पाते वे उनकी कविता, इतिहास,

समाजशास्त्र और सच पूछें तो अर्थशास्त्र से भी पीठ किये रहते हैं। हालांकि एक खाता वे लगातार खोलते और बन्द करते रहते हैं और उसमें कुछ गिनती और माप भी लिखते रहते हैं। कई बार वे यह काम भी ठीक से नहीं कर पाते क्योंकि वहां मनुष्य की अनुपस्थिति होती है और काम बहुत उबाऊ होता है। यह एक बड़ी साफ बात है जैसे मज़दूर लगातार घड़ी देखता और मेहनताना गिनता है लेकिन अपने 'अनुभव' से अजनबी होता जाता है वह उसकी शिनाख़्त नहीं कर पाता। कोई मज़दूर शिनाख़्त कर भी ले तो उसे व्यक्त नहीं कर पाता उसे न अपनी भाषा मिलती है, न कला, न संगीत न ज्ञान। यह विवशता अगर समूचे मज़दूर आन्दोलन की विवशता है तो समझिये पूरा आन्दोलन एक अजनबीकरण का शिकार हो रहा है।

पत्थर

❖

समय कई बार प्रस्तरीकृत होकर ही अपने को बचा पाता है इसलिए रचनाकार और कलाकार को पत्थरों की लिपि समझनी पड़ती है। पत्थरों में भी एक से अधिक लिपि होती हैं। शिल्पकार उसे एक लिपि में पढ़ता है, कवि दूसरी लिपि में, पुरातत्ववेत्ता और मज़दूर उसे और भी भिन्न लिपियों में पढ़ते हैं।

❖

समय पानी, हवा, आग और ध्वनि के द्वारा पत्थर पर एक लिपि उकेरता है। ये सब मिलकर दबाव और आकार की रचना करते हैं। इस लिपि में अर्थ के अनेक स्तर होते हैं।

❖

समय पत्थर में सबसे ज़्यादा सुरक्षित रहता है। पत्थरों में धरती का शैशव पढ़ा जा सकता है।

❖

बूढ़े लोग पत्थर की तरह होते हैं। उन्हें वही पढ़ सकता है जो पत्थरों को पढ़ने का हौंसला रखता है।

❖

जब पत्थर आराम करते हैं तो रात हो जाती है।

❖

पत्थरों की कथा एक संगीन रहस्य–कथा है। खंडहर और तमाम नष्ट होती चीज़ें इस कथा की शुरूआत है।

❖

समय की आँखें उसके बाहर होती हैं। समय का अतिक्रमण करके ही उसे देखा जा सकता हैं।

❖

समय पत्थर में और पत्थर समय में बदल सकता है।

❖

पत्थरों को पढ़ने वाले जानते हैं, कई बार उनमें फूल छिपे होते हैं और तितलियां उनसे निकल कर तरह–तरह के रंगों वाली उड़ान भर सकती हैं।

❖

पत्थर स्मृतियों से बने होते हैं। मिट्टी, चूना, कोयला, लावा और तरह–तरह के खनिज और तरह–तरह के आकारों में उनकी यात्रा की स्मृति होती है। इसकी वजह से ही पत्थरों की अलग–अलग पहचान होती हैं और उनका एक सन्दर्भ भी होता है।

❖

रंग, रूप आकार और स्पर्श सिर्फ फूलों में नहीं पत्थरों में भी है। प्राचीनता उनकी खुशबू है।

❖

पत्थर पर लिखने से ऐन पहले मेरे मन में यह शब्द घूम रहे थे 'ठुकराए हुए'।

स्मृति

1.

स्मृति दिखाई न देने वाली फितरत है यूं वह तरह–तरह के रूप धारण करके ऐन सामने आती है मसलन 'मुग़ले आज़म' जैसी फिल्म एक दौर की स्मृति पर टिकी है। स्मृति का एक सिरा बीते समय में और एक सिरा समकालीनता में डूबा होता है इस तरह स्मृति पुरानी और नई एक साथ हो सकती है। जितना विशाल और प्रचुर यह दृश्यमान जगत है उतना ही विशाल और प्रचुर स्मृति जगत भी है। यह व्यक्ति से सम्बद्ध होती है और बड़ी निराली शैलियों वाली होती है लेकिन इसका एक सामूहिक स्वरूप भी होता है मसलन किसी एक शहर के लोग बहुत दिन बाद भी कभी इकट्ठे हों तो उनके बीच शहर की एक सामूहिक स्मृति होती है। यह स्मृति भाषा और बिम्बों में स्वरूप ग्रहण करती है। इस तरह स्मृतियों की उतनी ही भाषाएं हैं जितनी मनुष्य की भाषाएं बल्कि इससे ज्यादा क्योंकि स्मृति में जानवरों, चिड़ियाओं और प्रकृति की ध्वन्यात्मक भाषा भी मौजूद होती है। स्मृति हमेशा हमारे साथ रहती है जैसे प्रकृति हमारे साथ रहती है। हम उसे भूले हों तो भी। हम सांस लेते और छोड़ते हैं जैसे कुदरत कभी नुमायां हो जाती है और कभी छिप जाती है। स्मृति भी बारीक डिटेल के साथ सामने आ सकती है और ओझल भी हो सकती है। इस तरह स्मृति और विस्मृति दो जुड़वां चीज़ें हैं जिनके बीच पेचीदा सम्बन्ध है। कई बार अपनी स्मृति बचाये रखने के लिए आदमी

को विस्मृति में जाना पड़ता है यानि स्मृति एक मनोरचना ही नहीं एक गुण या एक मूल क्षमता भी है। अगर हमारा जीवन पांच इन्द्रियों पर टिका है तो स्मृति छः इन्द्रियों पर टिकी है। यह छठी इन्द्रिय ही कई बार अदृश्य सूत्रों को जोड़ती है या उघाड़ती है। यह स्वप्न में भी सक्रिय होती है। कभी–कभी झूठ से घेर लिया गया जकड़ा गया लाचार मन स्वप्न या स्मृति में 'सच' का उद्‌घाटन करता है।

स्मृति में एक इतिहासबोध, समयबोध होता है स्वप्न में इसका होना अनिवार्य नहीं। स्मृति का उपयोग हम हर क्षण करते हैं स्वप्न का नहीं मसलन चाकू की स्मृति के साथ ही हम चाकू का इस्तेमाल करते हैं। स्मृतियों में विरोधी चीज़ें एक साथ रहती हैं जैसे एक ही व्यक्ति की दो विपरीत तरह की स्मृतियां एक साथ मौजूद होती हैं। यानि स्मृति की एक संरचना होती है। जैसे प्रकृति की संरचना है और फिर उसमें हर चीज़ की अलग संरचना है। एक पेड़ की संरचना है और फिर उसकी पत्ती की भी एक संरचना है। संरचना सिर्फ़ आकार–प्रकार नहीं बल्कि उसके अन्दर की एक संयोजना एक सिस्टम एक सम्बन्ध–व्यवस्था है। स्मृति में भी एक सम्बन्ध व्यवस्था होती है मसलन सवर्ण और दलित की स्मृति में सम्बन्ध व्यवस्था भिन्न–भिन्न होती है, उसका स्वरूप भिन्न होता है। दोनों ही गरीब हों दोनों उत्पीड़ित हों तो भी यह भिन्नता वहां होगी क्योंकि दोनों का उत्पीड़न भिन्न है। इनमें बहुत सा हिस्सा सामान्य भी हो सकता है लेकिन भिन्न गठन के अन्दर। यह विविधता से जुड़ी भिन्नता नहीं विषमता से जुड़ी भिन्नता होती है। यह जगह चिन्हित करना ज़रूरी है। एक विभाजित विषम समाज में स्मृति में भी विभाजन और विषमता न केवल अनुभव की भिन्नता के रूप में बल्कि स्मृति के संरचनात्मक गठन में भी मौजूद होती है। ये विभाजन और विषमता खिड़की और दरवाजों की तरह होते हैं जो किसी के लिए खुलते हैं और किसी के लिए बन्द होते हैं यानि स्मृति में भी एक सैलेक्शन होता है। यह किसी विशेष बात या नए अनुभव के लिए बोध को जगा सकती है या सुला सकती है।

2.

स्मृति में एक अप्रत्यक्ष या प्रत्यक्ष चुनाव होता है लेकिन उसकी एक वस्तुगतता भी होती है, उसे समझा जा सकता है, उसका विश्लेषण हो सकता है। स्वयं व्यक्ति समय के साथ उसमें संशोधन और सम्पादन भी करता है। कई बार तात्कालिक दबावों के हटने या नया अनुभव, नया सन्दर्भ सामने आने पर हमारी स्मृति में भी कुछ बदलता है। कई बार हम एक व्यक्ति के बारे में उसकी मौत के बाद 'उदार' हो जाते हैं और कई बार किसी डर या दबाव के हट जाने से 'कठोर' हो जाते हैं। इस उदारता और कठोरता का एक मूल्य है। ये मिथ्या या केवल मनोगत नहीं हैं। इसके आधार धारण करने वाले के बाहर भी मौजूद हैं। स्मृति किसी सरल कार्य–कारण शृंखला की तरह नहीं है और न इसका स्वरूप 'हमेशा' के लिए तय है।

3.

स्मृति केवल एक संग्रहालय नहीं है क्योंकि इसमें जीवित संवेदनाएं गुथी होती हैं एक मनुष्य या जानवर की स्मृति के साथ कोई भूखण्ड, झाड़ी, रंग, खुश्बू, ध्वनि भी उपस्थित हो सकते हैं, स्मृति में संवेदना, भावना के साथ उसे देख रहे व्यक्ति की भावना और संवेदना भी सक्रिय होती है। स्मृति हिलते हुए पानी की तरह गतिमय, चट्टान की तरह खड़ी हुई या एक तलवार की तरह सिर पर लटकी हुई हो सकती है।

4.

रचना के समय स्मृति सक्रिय रहती है। किसी खास स्मृति के दृश्यमान न होने पर भी वह एक वायुमण्डल की तरह उपस्थित होती है। यह वायुमण्डल तेज़ गर्म हवाओं और धूल की बौछारों वाला हो सकता है या ठण्डी हवा और पानी की बारीक बौछारों वाला भी। यह धूल या पानी के कुचक्र, भँवर की तरह हो सकता है या पूरब से पच्छिम की ओर बहती सुहावनी हवा की तरह भी हो सकता है।

मन की गति सबसे तेज़ होती है तो स्मृति की भी कोई सीमा नहीं इसमें कल्पना भी शामिल हो सकती है और विखण्डन भी। आप एक युग की यात्रा कुछ क्षणों में कर सकते हैं और क्षणों को पूरे जीवन में शामिल कर सकते हैं। स्मृति में जब कल्पना भी शामिल होती है तो एक स्वप्न भी स्मृति में रहने लगता है।

5.

स्मृति एक अवकाश होती है जैसे प्रतिबिम्ब एक अवकाश से पैदा होता है और आगे एक अवकाश की रचना करता है। जैसे 'डबरे में सूरज का बिम्ब' सूरज और डबरे के बावजूद है वह अतिरिक्त है वह दोनों के अवकाश से यानि स्वतन्त्रता से बना है। मॉल में जुड़े दर्पणों के प्रतिबिम्ब एक जैसे यान्त्रिक होते हैं वे स्मृति और कल्पना का अवकाश खत्म कर देते हैं। डबरे में सूरज का बिम्ब हवा के झोंके से, चिड़ियाओं के शोर से तिनके की ओट से रूप बदल सकता है वह जैसे जीवित प्रकृति के साथ धड़कता है। लहर के बीच से टूटने पर दस लहरों में दस या ज्यादा सूरज हो सकते हैं, उनकी भंगिमा अलग–अलग हो सकती है। यह अवकाश, यह अतिरिक्त होना – यही आज़ादी है। इसके बिना प्रकृति की धड़कन रुक जाती है और स्मृति भी एक लोथड़े की तरह आपके वजूद पर गिर पड़ती है। इसके साथ कोई क्यों अपना समय गुज़ारना चाहेगा?

6.

स्मृति पर लिखते हुए मैं अपनी ही बहुत सी स्मृतियों से बच रही हूँ मसलन न्याय की आस में टिका एक चेहरा ज़किया जाफरी। वह एक समय बनकर हम सब पर छा गया है जैसे कोई अधूरी बात आपके अन्दर कसकती रहे। मैं क़ौसर बानो से कभी मिली नहीं तीस्ता से मिली हूँ मैंने बहुत सी रिपोर्टें पढ़ीं जिनमें क़ौसरबानो का ज़िक्र था। उन रिपोर्टों में खदेड़े जाते हुए बदहवास चीखते भागते, गिरते और रौंदे जाते हुए लोगों के बीच से क़ौसर बानो समूची मेरी स्मृति में आ गई हालांकि उसका अंग भंग किया गया था, पेट चीर कर भ्रूण बाहर निकाला

गया था लेकिन मेरी स्मृति में वह अपने गर्भ सहित समूची आ गई और वह बरसों से वैसी ही है। मैंने बचपन में गर्भ से झुकी मां को देखा था और किशोरावस्था में सात महीने का गर्भ लिए उसे पिटते, धक्के दिये जाते हुए, कमरे के कोने में बार–बार धकेले जाते हुए देखा था। मैंने उस पूरे गर्भ वाली औरत को भी देखा था जिसका बच्चा आलू खोदने के दौरान खेत में ही पैदा हो गया था। उन औरतों को भी देखा है जो भारी गर्भ संभाले सर्दियों की शामों में रेलवे स्टेशन या दुकानों के आगे भीख मांगती रहती हैं। मैंने उन सहयोगी अध्यापिकाओं को भी देखा है जिन्हें अनियमित होने के कारण मातृत्व अवकाश नहीं मिला और अक्सर वे प्रसव से एक–दो दिन पहले तक काम पर आती रहती थीं। इन औरतों पर लड़की पैदा न हो जाए इस आशंका की एक छाया रहती थी और वे गर्भ का भार संभाले लगभग समाधि में स्थित होकर धीमे–धीमे सारे काम निपटाती थीं। वह हर जगह अकेली चलती नज़र आती थीं क्योंकि उनकी गति सबसे अलग बहुत धीमी और सधी हुई होती थी। मैं उनके अकेलेपन और उनकी आत्मस्थता को देखा करती थी। इन सभी औरतों की छवि में सबसे आगे क़ौसरबानो समूची अपने गर्भ सहित मेरी स्मृति में आ धँसी। कौसरबानो को देखना सभी गर्भवती औरतों को देखना है। उसके सन्दर्भ में सभी गर्भवती औरतों के प्रति न्याय की मांग छिपी हुई है। इस जगह आकर न्याय की उम्मीद में टिका एक चेहरा लगातार क़ौसरबानो के साथ रहता है। वह चेहरा ज़किया जाफरी का है। अपने एकान्त में मैं उन्हें कौसर और ज़किया कहकर पुकारती हूँ।

7.

स्मृतियां उत्पीड़ितों का औजार हैं मैंने ही कहीं लिखा है। स्मृति उत्पीड़क की छवि को बन्दी बना लेती है। यह बन्दी छवि उत्पीड़ित को आत्मपक्ष के निरूपण में मदद करती है। अगर आत्मपक्ष को निखारने का काम नहीं होता है तो कई बार स्मृति निजी फोड़ों में और नासूर में बदल जाती हैं। ऐसी स्मृति से एक वृथा भावुकता जुड़ जाती है जो आदमी की नज़र कमज़ोर कर देती है। निजी

भावुकता और दुख से अलग होना अपने जैसों का पक्ष यानि आत्मपक्ष निखारने के लिए ज़रूरी होता है ताकि हम स्मृतियों के गोदाम की सफाई करते रहें और भावुकता को पछाड़कर संवेदनाओं के छोर साबुत निकाल लें। संवेदना के छोर बाहर से जुड़ते ही स्मृति का विस्तार करने लगते हैं और आत्मपक्ष की रचना शुरू हो जाती है। स्मृतियों का बोझा नहीं ढोना चाहिये। मृत स्मृतियां आपको अजनबीपन में धकेल देती हैं।

इस तरह केवल स्मृति ही नहीं विस्मृति भी उत्पीड़ितों का एक औजार है।

8.

अक्सर लोग अपनी स्मृति से बेख़बर रहते हैं उस पर ध्यान नहीं देते जैसे परछाई पर अक्सर ध्यान नहीं दिया जाता। हर चीज़ की परछाई उसके साथ होती है लेकिन अलग होती है। ऐन आपके आगे या बगल से निकलती हुई परछाई आपके मुकाबले बहुत छोटी या बड़ी हो सकती है। वह मोटी और पतली भी हो सकती है। आपके मुकाबले परछाई बड़े अलग–अलग अनुपात में प्रकट होती है। सूरज–चाँद की स्थिति भी परछाई को प्रभावित करती है और चारों ओर की चीज़ें भी जैसे एक पेड़ की परछाई आपकी परछाई के साथ हो सकती है। किसी समय हवा के साथ आपकी परछाई हिल सकती है और गुम हो सकती है। स्मृति भी आपके दिमाग की परछाई है जो आपके अलावा दूसरी बहुत सी चीजों पर टिकी है। फिर भी वह आपकी परछाई के मुकाबले अधिक स्वतन्त्र है क्योंकि आपका दिमाग शरीर के मुकाबले ज्यादा स्वतन्त्र है और वह बहुआयामी है।

9.

कवि का दिल–दिमाग उसके औजारों का बक्सा है इसीलिए वह धरती पर आज़ाद जीव है गोकि साधारण लोगों की तरह चारों ओर से दबा है, इस बक्से में ऐसे औजार होते हैं जो अक्सर सबको दिखाई नहीं देते। इसमें बहुत लम्बी एक मटमैली सी डोरी होती है। जैसी डोरी मिश्री की डली के बीच होती है। यह स्मृति

है। इस डोरी से संवेदनाओं, रंगों, ध्वनियों, खुश्बू के कण, सुखद और दुखद गीतों की लय और तरह–तरह के मौसमों के वायुमण्डल पारदर्शी कणों की तरह चारों ओर चट–चट चिपकते रहते हैं। यह बहुत लम्बी हीरों की लड़ी है जिसमें हीरे अपनी मर्ज़ी से चिपके हैं और अपनी मर्ज़ी से कोई झड़ भी जाता है। आज़ादी को आख़ीर तक महसूस करने वाले रचनाकारों में यह हीरे की बहुत लम्बी लड़ी अधिक से अधिक पारदर्शी और कठोर होती जाती है।

10.

जो व्यक्ति कुछ देखता है और रिकॉर्ड पर ला सकता है वही साक्षी है। उसे किसी अन्य 'प्रमाण' या 'एप्रूवल' का इन्तज़ार नहीं करना चाहिये। यह सबक़ उन सभी लोगों के लिए है जिनके काम के मोर्चे अन्दरूनी या बाहरी वजहों से छिन्न–भिन्न हो जाते हैं। अन्दरूनी कारणों से छिन्न–भिन्न मोर्चों पर अक्सर सम्बद्ध व्यक्ति का आईसोलेशन भी जटिल प्रकृति का और दुहरा होता है। बाहरी कारणों से जब कोई मोर्चा छिन्न–भिन्न होता है तो प्रभावित लोगों के बीच एक अन्दरूनी एकता होती है जबकि अन्दरूनी कारणों से छिन्न–भिन्न हुए मोर्चों में यह एकता विस्फोट के साथ टूटती है। उसके बाद अक्सर बाहरी कारण भी एक बहिष्कार या खामोश निष्कासन जैसी परिस्थिति बनाते हैं। इससे प्रभावित लोग मजबूरी या भावनात्मक सूत्रों और कुछ खो बैठने की मर्मान्तक भावना के साथ पुरानी लोकेशन पर कई बार वास्तविक रूप में और अक्सर चेतना के धरातल पर मंडराते रहते हैं। जैसे कोई बार–बार हादसे की जगह पर प्रियजनों को याद करते हुए चक्कर काटता हो। जैसे औरतें उस आदमी के कपड़ों की तहें ठीक करती हैं, सलवटें निकालती रहती हैं जो मर चुका है। जैसाकि बहुत लोग यकीन करते हैं कि अतृप्त आत्माएं अपनी परिचित जगहों पर भटकती रहती हैं उसी तरह अन्दरूनी हादसों का शिकार आदमी भूत की तरह छिन्न–भिन्न मोर्चों के मलबे में भटकता रहता है। कई बार वहां छुट्टे काम करने लगता है जैसे किसी किताब के अधजले पन्ने बटोर रहा हो। यह वास्तव में दुखद है। कोई भी आदमी केवल छुट्टे

कामों के लिये नहीं होता। गाँवों, बस्तियों में धंसकर नई–नई बहसें तैयार करने और मोर्चे गठित करने में कोई अपनी उम्र इसलिए नहीं गलाता कि अन्ततः एक दिन वह कुछ फुटकर काम करेगा और 'आराम से' जीवन बितायेगा।

11.

वक़्त के साथ कई बार स्मृतियां ख़राब हो जाती हैं। वे सील जाती हैं। उनपर काई या फफूँद जैसे काले–सफ़ेद चकत्ते उभर आते हैं। कभी–कभी उनमें से मृतक की देह जैसी गन्ध आती है। बेध्यानी में ये गन्ध चॉकलेट या बिस्किट की गन्ध की तरह भी लग सकती है। दीमक उनकी जिल्दों में सुरंगी छेद बना देती है और घुन उनके किनारे चाट जाता है। उनके बीच से स्याही धूल की तरह झरती है और आंखों को रोगी बना देती हैं। सिकुड़ी हुई पुतलियों में इनका कोई अक्स नहीं बनता। इन स्मृतियों में हमारे प्रिय से प्रिय प्रसंग होते हैं, ऐतिहासिक दस्तावेज़ और क़रार होते हैं, इसमें निःशेष हुए सम्बन्ध होते हैं। इच्छाओं के भ्रूण होते हैं जो वक़्त से पहले मां की कोख से गिर पड़े। इन स्मृतियों के साथ हमारा दिमाग़ कभी कभी उजड़ी हुई सूनी कोख की तरह होता है, कभी शवगृह की तरह जिसके एयरकन्डीशनर ठीक से काम नहीं करते और कभी एक लावारिस गोदाम की तरह। इन स्मृतियों को जला देना चाहिये। नए बीजों के लिए राख एक अच्छी उर्वरक होती है।

———